ग्रामीण व्यावसायिक महिलाओं के व्यवसाय संबंधी समास्याओं का अध्ययन

पीएचडी स्कॉलर :- खुशबू पाटीदार

युनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी जयपुर, (राजस्थान)

सारांश :- उद्यमी व्यक्ति वह साहसी व्यक्ति कहलाता हैं। जो अपने व्यवसाय में जो अपने लाभ या हानि को वहन करने की क्षमता रखता है, इस पेपर में मेरा लक्ष्य है की है कि महिला उद्यमियो के व्यवसाय में होने वाली समस्याओं का अध्ययन करना है ताकि उनके व्यवसाय में सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक तथा पूंजीगत संबंधी समस्याओं का पता लगाया जा सके। जिससे उनके भविष्य में होने वाली समस्याएं कम हो सके।

मध्य प्रदेश के धार जिले में जो महिलाएं निवास करती है, उनके व्यवसाय सम्बन्धी कारणों में शिक्षा की कमी सामने आई है। क्योंकि उनके व्यवसाय छोटे पैमाने पर होने के कारण होने वाली समस्याओं का पता लगाया जा सके। क्योंकि उन्हें अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है जिससे उन्हें भविष्य में होने वाली हानियों का अध्ययन करना मुश्किल प्रतीत होता है। आज के युग में ज्यादा संख्या में महिलाएं नए नए कार्यों को करने में तत्पर रहती है। परंतु वह हतोत्साहित हो जाती है की उन्हें प्रोत्साहित करने वाला कोई भी नहीं है न कोई संस्था और न कोई सम्मेलन जिनसे उनका उत्साहवर्धन किया जा सके उद्यमीता एक ऐसा लक्ष्यपूर्ण कार्य हैं जो की भविष्य में होने वाली हानियों का पता लगाकर उन्हें काफी हद तक कम कर सकता हैं। हमारे देश में महिलाओं को पुरुषो से पीछे निहारा जाता है उनकी मानसिकताएं महिलाओं को लेकर काफी प्रतिकूल है वह बिल्कुल नही चाहते की महिलाएं स्वयं का कोई व्यवसाय संपन्न करे या उसे बड़ाए। उनका कहना है की महिलाओं को ये सब काम शोभा नही देते है। उनका काम केवल पारिवारिक कार्य करना है। इन कार्यों के लिए ही वह बनी हैं उधमिता द्वारा समाज मैं होने वाली गरीबी कुपोषण जैसी अनेक समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है । उद्यमी व्यवसाय हस्तकला, शिल्पकला, मिट्टी के बर्तन, साड़ी, चूड़ी आदि व्यवसाय है। जिनके समस्याओं का जिसका गहनता से मेरे द्वारा अध्ययन किया जा रहा हैं। उद्यमिता किसी देश की प्रगति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं उद्योगों के विकास के लिए उधमिता की संस्कृति आवश्यक है उद्यमिता व्यक्तिगत रचनात्मक भावना से शुरू होती है, जो कि व्यवसाय के दीर्घकालिक स्वामित्व,व्यवसाय के सृजन, आर्थिक सुरक्षा और पूंजी के निर्माण में बदल जाती है औद्योगिकीकरण के लिए उद्यमशीलता कौशल आवश्यक है और यह गरीबी और बेरोजगारी को कम करता है यह अनोखा बाजार अर्थव्यवस्था के बदलाव का दौर हैं, अब महिला उद्यमियो की संख्या बड़ रही है हालांकि आप सृजन में महिलाओं की भागीदारी असंतोष जनक है सूक्ष्म, लघु, और मध्यम, उद्यमो में महिला उद्यमिता की महत्वपूर्ण भूमिका है क्योंकि यह नवाचार और रोजगार सृजन में योगदान देती है ।

अतः महिलाओं के लिए ऐसे अधिकार उपलब्ध होना चाहिए जिससे वह सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक स्तर पर ऊपर उठ सके और समाज में एक स्वतंत्र महिला व्यवसाय बना सके। पिछड़ा वर्ग ग्रामीण विकास को ध्यान में रखते हुए मेरा प्रस्ताव है।

मुख्य शब्द :- समस्याओं की सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक स्थिति, कुपोषण शिक्षा स्तर में सुधार।

प्रस्तावना : उद्यमिता का अर्थ वह साहसी व्यक्ति है , जो अपने विचारों को ध्यान में रखते हुए अपनी लाभ, हानि वहन करने की क्षमता रखने के उद्देश्य से किसी नए व्यवसाय या संगठन का निर्माण करता है। समाज में

ऐसी बहुत सी महिलाएँ है, जो अपनी कला या अपने कौशल से पुँजी प्राप्त करने के लिए निरन्तर प्रयास कर रही है। महिलाओं को उनकी सीमा के अनुसार ही शिक्षा प्रदान कराई जाती है बहुत ही कम ऐसी महिलाएँ जिन्होंने शिक्षित होकर एक अच्छा मुकाम हासिल किया है। आज के युग कि बात करे तो लोग विकसित होते जा रहे हैं। लेकिन जब हम महिला के विकास के बारे में गौर से देखे तो अभी भी लोगों में महिलाओं के बारे में गलत सोच और मानसिकता हैं। जैसे उदा. : कि तुम महिला हो अपने परिवार का पोषण नहीं कर सकती, तुम कुछ काम नही कर सकती और खुद अपना व्यवसाय भी शुरू नहीं कर सकती है, ये तक कहते है, कि ये तुम्हारे बस में नहीं है व्यवसाय चलाना। बहुत सी धारणाओं के कारण आज महिलाएं भेदभाव और शोषण का शिकार हो रही है, एक पारंपरिक विचार जो वर्षों से परिवारों में झलक रहा है महिलाओं का निष्क्रिय तथा अन्य लोगो पर आश्रित या निर्भर माना जाता है महिलाओं ने भी अपनी कौशल को महसूस किया है जिसके चलते उन्होंने स्वयं का व्यवसाय या उद्यम स्थापित करना शुरू कर दिया है। उनका व्यवसाय के क्षेत्र छोटा सा कदम है। जिससे सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और आर्थिक बाधाओं के बावजूद महिलाएँ पुरुषो से सफलतापूर्वक प्रतिस्पर्धा भी कर रही है। शिक्षा राजनीतिक, कानूनी सुरक्षा उपाय, सामाजिक सुधार आदि कारणों से महिलाए स्वयं सर्वोच्च स्तर पर पहुँच रही है। ऐसा नहीं था, कि महिलाएँ व्यवसाय के इन सभी व्यावसायिक कार्यों को संभालने में सक्षम नहीं थी। कई महिला उद्यमिता के मार्ग में प्रबंधन सम्बन्धित बाधा उत्पन्न करने वाले कारक आए और उन सभी समस्याओं का उद्यमी महिलाओ ने सामना किया और लेकिन परिवारो की तंगी को देखते हुए और अपनी बेटियो और बहुओं का समर्थन करने लगी। तथा वह महिलाएं अपना स्वयं व्यवसाय कर रही है जो कि बाहर जाने में असक्षम है। क्योंकि वह बाहर के काम-काज नही कर सकती क्योंकि बाहरी प्रतिस्पर्धा ही महिला उद्यमी के मार्ग की सबसे ज्यादा परेशानी है। अधिकतर महिलाएं अपना व्यवसाय शुरू कर रही है। क्योंकि वह शिक्षा से परे है। वह अपने व्यवसाय में उपयोग की जाने वा वाली गतिविधियो या तकनीकी को संभालने या समझने के लिए पूर्ण रूप से शिक्षित नही है। क्योकि इसमे जोखिम का डर, अनुभव मे कमी, प्रशिक्षण तथा असुरक्षा महसूस करना, अन्य लिंग भेदभाव आदि का शिकार होती है, यह कारक महिला के स्तर को क्षति पहुंचाते है।

ऐसे क्षेत्र जो पिछड़े हैं। वहाँ मूलभूत सुविधाओं का अभाव होता है, जैसी कि महिला के उद्योग धन्धे/व्यवसाय को स्थापित करने अथवा अन्य उद्योग व्यवसाय को चलाने में साहस एवं उद्यमशीलता की आवश्यकता होती है। क्योंकि ऐसे क्षेत्र प्रबंधन के अभाव व तैयार माल कि बिक्री की समस्याएँ होती है। उद्यमिता द्वारा गरीबी, बेरोजगारी, कुपोषण असमानता जैसी समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है किसान, कृषि मजदूर, पारिवारिक उद्योग व अन्य सेवाओं में लोग पूर्व रूप से पिछड़ा है। उद्यमी महिला के व्यवसाय की बात करे तो हस्तकला, शिल्पकला, कुटिर उद्योग, मिट्टी बर्तन, साड़ी, व्यवसाय, चूडी व्यवसाय आदि ऐसे छोटे छोटे व्यवसाय है जिनमे बहुत सी समस्या उत्पन्न होती है।

उद्यमिता किसी देश की वृद्धि और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उद्योगों के विकास के लिए उद्यमिता संस्कृति आवश्यक है। उद्यमिता व्यक्तिगत रचनात्मक भावना से शुरू होती है जो व्यवसाय के दीर्घकालिक स्वामित्व, व्यवसाय के सृजन, आर्थिक सुरक्षा और पूंजी के निर्माण में बदल जाती है। औद्योगीकीकरण के लिए उद्यमशीलता कौशल आवश्यक है और गरीबी और बेरोजगारी को कम करता है। यह बाजार अर्थव्यवस्था में बदलाव का दौर है, अब महिला उद्यमियों की संख्या बढ़ रही है। हालांकि, आप सृजन में

महिलाओं की भागीदारी असंतोषजनक है सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों में महिला उद्यमिता की महत्वपूर्ण भूमिका है क्योंकि यह नवाचार और रोजगार सृजन में योगदान देती है।

महिला उद्यमियों को उद्यम स्थापित करने में शामिल विभिन्न कार्य करने होते हैं। ये कार्य तभी किये जा सकते हैं जब उनके पास ज्ञान, कौशल और पारिवारिक सहयोग हो। महिला उद्यमिता की मंशा व्यावसायिक समस्याओं का समाधान प्रदान करने की होती है। महिला उद्यमियों को व्यवसाय शुरू करने और विकसित करने में कई लिंग संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता है जैसे सांस्कृतिक बाधाएं, वैवाहिक और विरासत कानूनों से संबंधित बाधाएं वित्तीय संस्थानों से वित्त की अपर्याप्त पहुंच, सीमित गतिशीलता और नेटवर्क और सूचनाओं तक अपर्याप्त पहुंच महिला उद्यमिता गरीबी को कम करने और महिला सशक्तिकरण में योगदान देती है। सरकार और विकासात्मक संगठन विभिन्न योजनाओं और प्रोत्साहनों के साथ महिला उद्यमियों को बढ़ावा दे रहे हैं।

पिछड़ा ग्रामीण विकास को ध्यान में रखते हुए मेरा प्रस्ताव है कि उद्यमी महिलाओं को समय समय पर :-

महिलाओं के मनोबल को बढ़ाने के लिए कुछ-कुछ प्रयास किए जाने चाहिए ।

साक्षात्कार के आयोजन के माध्यम से महिलाओं के कौशल की पहचान की जानी चाहिए।

कंप्यूटर का सामान्य ज्ञान जो शिक्षा का महत्वपूर्ण पहलू है गणित और गणना के बारे में प्रशिक्षण प्रदान करना चाहिए।

साहित्य समीक्षा :- साहित्य समीक्षा किसी विषय पर अब तक उपलब्ध सभी जानकारी की एक रूपरेखा है जब आप एक शोध विषय चुनते हैं तब प्रारंभ कदम अन्वेषण की ओर होता है और विषय पर किए गए पिछले शोधों से परिचित होना बहुत ही आवश्यक हो जाता है क्योंकि साहित्य की समीक्षा को शोध की रीड की हड्डी माना जाता है जिस पर शोध की अवधारणा खड़ी होती है क्योंकि यह शोध के भाग की आवश्यकता प्रदान करता है, आज के परिदृश्य में **"ग्रामीण व्यावसायिक महिलाओं के व्यवसाय संबंधी समस्याओं का अध्ययन"** में विचार प्रस्तुत किए जा रहे हैं जो गांव में छोटे छोटे व्यवसाय को चलाने के लिए होने वाली समस्याओं से जूझ रही है महिला उद्यमी किसी भी अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में सक्षम रहती है जिनके पास कुछ नए विचारों को बाजार में लाने या सेवा प्रदान करने के लिए कौशल और आवश्यक पहल है वह अपने विचारों को लाभदायक बनाने के लिए सही निर्णय नहीं ले पा रही है क्योंकि उनके पास पर्याप्त ना तो धन है और ना ही कुशलता है वहीं परंपराएं भारतीय समाज में गहराई से जमा हो चुकी है जहां स्थापित सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारक पुरुष प्रधान रहे हैं तमाम सामाजिक बाधाओं के बावजूद भारत में महिलाएं बाकी भीड़ से अलग पहचान बनाए रखी है और अलग खड़ी है तथा अपने-अपने क्षेत्र में उनकी उपलब्धियों के लिए सराहना कर रही है भारतीय महिलाओं की व्यावसायिक स्थिति से बेहतर जीवन की विभिन्न आकांक्षाओं के संदर्भ में भारतीय समाज के सामाजिक ताने बाने में बदलाव के कारण प्रत्येक उद्यमी महिला की जीवन शैली में बदलाव की आवश्यकता है।

समान अधिकार और अच्छा स्थान प्राप्त करने के लिए एक लंबा रास्ता तय करना होता 10/21

1). शीर्षक आजीविका संरक्षण और प्रतिरोध उड़ीसा के जनजातीय क्षेत्र में महिला मंडल

फरवरी 2023 विज्ञान और इंजीनियरिंग पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन की कार्यवाही

1(1):108-184 डीओआई: 10.52783/cienceng.V 11i1.110

लेखक :- अंबुजा कुमार त्रिपाठी

यह लेख नारीवादी राजनीतिक पारिस्थितिकी को विशेष रूप से भूमि और पानी में सामान्य पुल संसाधनों के लिंग आधारित वितरण पर ध्यान केंद्रित करके समानता के बारे में अकादमिक बहस से जोड़ता है यह अंतर विरोध या तो सामान्य को सुविधाजनक बनाता है या बाधित करता है हमारा तर्क है की साझा प्रथाएं सांस्कृतिक और स्थानिक रूप से विशिष्ट है और पहले से मौजूद संसाधन पहुंच से आकार लेती है इस तरह की पहुंच अक्सर भूमि सुधार और सिंचाई परियोजनाओं वर्ग और लिंग की श्रेणियां के साथ और समान रूप से संचित होती है।

2). दिसंबर 2022

डी ओ आई: 10.13140/आरजी 2.2.2094684166

लेखक :- वंदिता, अरुण कुमार जायसवाल डॉक्टर आरबीएल श्रीवास्तव रिसर्च स्कॉलर एसोसिएट प्रोफेसर वाणिज्य और व्यवसाय प्रशासन विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

साहित्य समीक्षा की है कि दुनिया की लगभग 50% आबादी महिलाओं से बनी है भारत सहित दुनिया भर में 50% से अधिक आबादी महिलाओं की है हालांकि पुरुषों की तुलना में महिलाओं की देश की आर्थिक वृद्धि में कम भागीदारी मानी जाती है पारंपरिक मानसिकता जो महिलाओं को ग्रहणी के रूप में देखती है जबकि परिवार में पुरूष समकक्ष परिवार के लिए प्रदान करने का प्रभारी है मुख्य बाधा है जो इस देश में महिलाओं को आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने में रोकती है।

3). भारत में महिला उद्यमिता संस्थाओं संभावनाओं और विकास पर एक अंतरदृष्टि

सितंबर 2020 इंटरनेशनल जनरल आफ इंजीनियरिंग रिसर्च और V9 (09) डी ओ आई 10.17577/आई जे आर टी वी 9 आई एस 090224

लेखक :- चिन्मय साहू

समाजशास्त्र विभाग- उत्कल विश्वविद्यालय भुवनेश्वर

भारत में साहित्य समीक्षा की है कि महिला उद्यमियों के विकास और उधमाशीलता गतिविधियों में उनकी अधिक भागीदारी के लिए सभी क्षेत्रों से सही प्रयासों की आवश्यकता है महिला उद्यमशीलता के गुणों और कौशल के साथ ठीक से ढाला जाना चाहिए ताकि वह वैश्विक बाजारों के रुझानों चुनौतियों में बदलाव का सामना कर सके और उधमाशीलता क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए प्रयास करने और बनाए रखने के लिए पर्याप्त रूप

से सक्षम हो भारतीय महिलाओं और कानूनो की गारंटी राजनीतिक प्रक्रिया में भागीदारी का समान अधिकार और सामान शिक्षा और रोजगार में अवसर और अधिकार थे अभिनीत दुर्भाग्य से सरकार ने प्रायोजित किया है।

4). भारत में महिला उद्यमिता पर एक अध्ययन जून 2020

लेखक :- त्रत्विक सारस्वत

प्राथमिक वि आई टी विश्वविद्यालय रेमया लथभवन

इंडियन इंस्टीट्यूट आफ मैनेजमेंट बोधगया

साहित्य समीक्षा के अंतर्गत भारतीय महिला उद्यमियों के सामने आने वाली प्रमुख संस्थाएं सफलता की कहानियां तथा प्रभावित करने वाले कारक और समाज के विभिन्न वर्गों की दृष्टिकोण पर ध्यान दिया गया उद्यमिता अपने के लिए यह केवल चार दीवारों तक ही सीमित है इस मानसिकता को कैसे बदलना चाहिए तथा किस प्रकार उनके कौशल को ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए प्रेरित किया जाए जिससे वह सक्षम हो सके क्योंकि महिलाओं को जीवन यापन के लिए उद्यमिता अपने की प्रेरणा मिलेगी।

5). भारत में लघु और मध्यम उद्योग ऑन में महिला उद्यमिता का एक खोजपूर्ण अध्ययन

नवंबर 2020

लेखक :- दीक्षा रानी

इस्माइल नेशनल महिला पीजी कॉलेज मेरठ

यह साहित्य समीक्षा महिला उद्यमियों को समर्पित किया जा रहा है इसका मुख्य उद्देश्य महिला उद्यमियों के अनुपात को समझना और आसपास के लघु उद्योगों में महिला की भागीदारी का अध्ययन करना है इस लेख में उद्यमी महिलाओं को बढ़ावा देने और उनकी सहायता करने के लिए भारत सरकार द्वारा चलाए जा रही योजनाओं और कार्यक्रमों के बारे में बताया गया है तथा महिला उद्यमियों पर प्रकाश डाला गया है इसके निष्कर्ष में पता चला कि सर्वेक्षण के दौरान 70% महिलाओं को माइक्रोफाइनेंस योजनाओं और सुविधाओं के बारे में भी जानकारी नहीं है इसलिए सरकार को सरकारी व गैर सरकारी संगठनों की पहल करनी चाहिए और महिलाओं को वित्त सुविधा प्रदान करने के लिए जागरुकता फैलाना चाहिए।

6). महिला कर्मचारियों का कार्य जीवन संतुलन और ग्लास सीलिंग :-

एक साहित्य समीक्षा 2019 डी ओ आई 10.21276/ एसजेबीएमएस 2019.4.5.1

लेखक :- सोनिया डेलरोज नौरोन्हा

श्री रामन ऐथेल

श्रीनिवास विश्वविद्यालय भारत

साहित्य में महिला कर्मचारियों के कार्य जीवन संतुलन और ग्लास सीलिंग पर साहित्य की समीक्षा की है इसका उद्देश्य शोध करने की आवश्यकता और अंतर का पता लगाना है अध्ययन स्रोत विभिन्न पत्रिकाएं, रिपोर्ट, पुस्तके, डॉक्टरेट, थीसिस, इंटरनेट साइट आदि द्वारा शामिल हैं कॉपीराइट @2019 यह क्रिएटिव कॉमनस एट्रिब्यूशन लाइसेंस की शर्तों के तहत वितरित एक ओपन एक्सेल लेख है जो गैर व्यावसायिक उपयोग गैर वाणिज्य किया (सीसी बाय एनसी) के लिए किसी भी माध्यम से और अप्रतिबंधित उपयोग वितरण और पुनरूत्पादन की अनुमति देता है मूल लेखक और स्रोत को श्रेय दिया जाता है।

7). महिला उद्यमिता की समस्याएं और संभावनाएं

सोनू गर्ग और डॉक्टर पारुल अग्रवाल

रिसर्च स्कॉलर स्कूल आफ मैनेजमेंट जेईसीआरसी यूनिवर्सिटी जयपुर राजस्थान, भारत दिन स्कूल ऑफ मैनेजमेंट जेईसीआरसी युनिवर्सिटी जयपुर

प्रस्तुत साहित्य समीक्षा शीर्षक के संदर्भ में कहा गया है कि जब भी महिला अपने व्यवसाय को चलाना शुरु करती है उसे अनेक सामाजिक आर्थिक बाधाओ का सामना करना पड़ता है, इसलिए यह साहित्य महिला उद्यमियों की स्थिति की ओर उनके महत्व की चर्चा को प्रस्तुत करता है साथ ही विभिन्न साहित्य की समीक्षा करके इन महिला उद्यमियों के सामने आने वाली चुनौतियों की पहचान करने तथा बधाओ को दूर करने के लिए कुछ सुझाव देने का प्रयास किया गया है, महिला उद्यमी जब व्यवसाय संचालन करती है तो उस दौरान उसके साथ बाजार और कौशल संबंधी समस्याएं खड़ी हो जाती है, डर तथा रवैये से उत्पन्न बधाएं महिलाओं के स्वामित्व वाले उद्योगों के निराशाजनक प्रतिशत का एक अन्य कारण है महिलाओं की बहुत से समस्याओं को सरकार द्वारा कम किया गया है, सातवीं आठवीं पंचवर्षीय योजना ट्रेड महिला और केयर योजना भी क्रियान्वित कर रहा है, महिला उद्यमी की सहायता के लिए समर्पित केंद्र स्थापित किए गए हैं।

8). सुक्ष्म उद्यमिता विकास और जीवन की गुणवत्ता में सुधार साहित्य समीक्षा 2014 मार्च 18

लेखक :- मणिदीप दास गुप्ता

बर्दवान विश्वविद्यालय

अनुसंधान समीक्षा इंटरनेशनल जनरल ऑफ मल्टीडिसीप्लिनरी मणिदीप दास गुप्ता जी ने अपने शीर्षक में खोज कर साहित्य समीक्षा के दौरान बताया है कि सूक्ष्म लघु और मध्यम उद्योगों को विभिन्न तरीकों से समाज के आर्थिक विकास का सबसे जीवंत क्षेत्र माना जाता है इस संदर्भ में पूंजी की मात्रा काफी कम लगती है लघु तथा मध्यम की तुलना तथा प्रतिभागियों के लक्ष्य की बात की जाए तो उनकी गुणवत्ताओं में सुधार को बढ़ावा मिलता है तथा उनका जीवन यापन गहरी आवश्यकताओं पशु कारक को पूरा करने सम्मान और समाज की स्थिति में अच्छा स्थान प्राप्त करना है क्योंकि सूक्ष्म उद्यमिता की बात हो रही है तो उन्हें अनेक समस्याओं से लड़ना पड़ता है, जैसे शिक्षा कौशल वित्त ज्ञान व्यवहारिक विपणन की प्रशासनिक दक्षता आदि कमियां सामने

आती है, महिला उद्यमी लिंग और असंवेदनल पंजीकरण प्रक्रिया और प्रशासनिक स्तरों में रोजगार सृजन में लिंग भेदभाव इकाई में महिला वर्ग की भागीदारी में बाधा उत्पन्न कर सकता है।

9). भारत में माइक्रोफाइनेंस संस्थान के माध्यम से

रुखसार जहां अंसारी, स्वीटी जामगादे और सुषमा बि

आतिथ्य प्रबंधन और खान पान प्रौद्योगिकी संकाय एमएस रवैया यूनिवर्सिटी आफ अप्लाइड साइंसेज इस साहित्य समीक्षा का उद्देश्य भारत में माइक्रोफाइनेंस इंस्टिट्यूट के माध्यम से महिला उद्यमशीलता के अवसरों उपयोग और चुनौतियों का अध्ययन करना है इसमें वर्णनात्मक और गुणात्मक शोध पद्धति है प्राथमिक डाटा प्रश्नावली के माध्यम से माइक्रोफाइनेंस संस्थान से एकत्र किया गया था अंतरराष्ट्रीय प्रशासको पुस्तको लेखो आदि से एकत्र किया गया नमूना आकर 124 था इसमें इस नतीजे पर पहुंचे कि ज्यादातर महिलाओं को माइक्रोफाइनेंस सुविधाओं के बारे में जानकारी नहीं है यह देखा गया है कि महिलाओं को उधारकर्ताओं को ऋण प्राप्त करने के लिए परिवार से समर्थन नहीं मिल रहा है जिससे महिलाओं का मनोबल और आत्मविश्वास खराब हो सकता है इसी परीक्षण से यह अनुमान लगाया गया कि महिलाओं के जीवन स्तर में वृद्धि और एम एफ आई द्वारा की जाने वाली वित्तीय सहायता के बीच महत्वपूर्ण अंतर है माइक्रोफाइनेंस संस्थाओं को चाहिए कि महिलाओं को अपना व्यवसाय शुरू करने के लिए अधिक प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करना अध्ययन के लिए डाटा इकट्ठा किया जाए जो प्रश्नावली और माइक्रोफाइनेंस संस्थान द्वारा इकट्ठा किया गया था। सर्वेक्षण करने पर पाया गया 70% महिलाओं को इसकी जानकारी ही नहीं है इसलिए सरकार को जागरूकता के लिए कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए ताकि जागरूकता मिल सके, क्योंकि 59% प्रतिशत उत्तरदाताओं का माइक्रोफाइनेंस की जानकारी नहीं है।

उद्यमिता की समस्याएं :-

(1) उद्यमिता भाग लेने के पीछे जिम्मेदारी कारक

(2) क्यू ओ एल इसके विभिन्न आयाम

(3) साहित्य को गिराने का प्रयास किया गया

(4) उद्यमिता विकास और क्यू ओ एल

(5) क्यू ओ एल का मापन

स्थिति :-

लिंग साक्षरता और धन के मामले में प्रतिभागियों को बेहतर बनाने में सूक्ष्म उद्यमिता के योगदान के लिए गहनता की जरूरत है ताकि गरीब लोगों की सूक्ष्म उद्यमिता लिंग साक्षरता आदि से जुड़ी समस्याओं का आकलन किया जा सके।

वर्तमान स्थिति में संबोधित किया गया:-

सम्बन्धित विषय पर की गई साहित्य समीक्षा शोधकर्ताओं के ज्ञान को समृद्ध करेगी ताकि सूक्ष्म उद्यमिता में महिला प्रतिभागी के लिंग साक्षात्कार पर प्रतिकूल प्रभाव ना पढ़ सके तथा उद्यमिता विकास की भूमिका का आकलन कर सके तथा संचालन में आने वाली बाधाओं का निराकरण भी कर सके यदि यह समाधान हो जाता है। तो व्यक्तियों के क्यू ओ एल में वृद्धि को मूर्त रूप दिया जा सकेगा।

10). माइक्रोफाइनेंस और महिला उद्यमिता एक विस्तृत साहित्य समीक्षा शगुप्ता तारीक, मोहम्मद

अब्बास भट मोहिउद्दीन संगमी

विस्तृत साहित्य का उद्देश्य माइक्रोफाइनेंस और महिला उद्यमी के बीच संबंध का पता लगाना है यह मौजूदा अनुभवजन्य और सैद्धांतिक साहित्य पर आधारित है इसमें यह पाया गया कि महिला लाभार्थी हालांकि अपने बाद के ऋणों का उपयोग उत्पादक उद्देश्यों के लिए करने में सक्षम है जिसे की अपने सूक्ष्म उद्योगों को शुरू करना या बड़ाना महिलाओं का अपना स्वयं का उद्यम शुरू करने में जिन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है उनकी पहचान की जानी चाहिए और तुरंत समाधान किया जाना चाहिए इसके अलावा महिला उद्यमिता पर माइक्रोफाइनेंस के प्रभाव के आकलन के संबंध में अनुभवजन्य साहित्य में एक शून्य है जिसे भरा जाना है।

भारत में महिलाओं के उद्यमिता की समस्या :-

निश्चित रूप से, भारत में महिलाओं के उद्यमिता के बारे में कई समस्याएं हैं, शोधकर्ताओं ने सामाजिक पहलुओं, आर्थिक जीवन, कौशल की समस्याओं, पारिवारिक सहायता की समस्याओं, साहस आदि से संबंधित मुद्दों की पहचान की है।

1.जीवन के निश्चित एजेंडे का अनुपस्थिति: शिक्षित महिलाएं घर की चार दीवारों (महेश बाबरिया और मित्तल छदर, 2010) में अपने जीवन को सीमित नहीं करना चाहते हैं। शिक्षित महिलाएं उनके सहयोगियों और साथ ही समाज से समान अवसर और अधिक सम्मान की मांग करती हैं और वे अपने सहयोगियों और साथ ही भारत में समाज के समान अवसरों और सम्मान के लिए संघर्ष कर रहे हैं। हालांकि, एक निश्चित एजेंडे के साथ कुछ महिलाएं भारत में व्यापार दुनिया में अच्छी स्थिति हासिल कर ली। आई। इंद्र नोई (पेप्सिको के सीईओ); डॉ। किरण मज़मदर-शॉ (बायोओन लिमिटेड के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक); अनू अगा (धर्मक्स इंजीनियरिंग के अध्यक्ष); सुलाजजा फ़िरोदिया मोतवानी (काइनेटिक इंजीनियरिंग लिमिटेड के संयुक्त प्रबंध निदेशक); एकता कपूर (बालाजजी टेलीफिल्म के प्रमुख); प्रिया पॉल (अपकीज के अध्यक्ष बुटीक होटल की पार्क होटल श्रृंखला) फिर भी ग्रामीण भारत में ज्यादातर महिलाएं या तो अनपढ़ या अर्ध-साक्षर हैं और वे आत्मसम्मान और आत्म सम्मान का उचित विचार नहीं हैं। इसलिए यह सवाल उठता है कि तुरंत आत्म-सम्मान पाने के लिए और समाज में अच्छी स्थिति प्राप्त करने के लिए एक निश्चित एजेंडा प्राप्त करने का प्रयास कर सकता है।

2. परिवार और कैरियर के दायित्वों के बीच संतुलन की अनुपस्थिति: भारतीयों के रूप में ज्यादातर महिलाएं परिवार के दायित्वों के बारे में बहुत गंभीर हैं लेकिन वे कैरियर के दायित्वों (माथुर, 2011, सिंह एन.पी.

1986) पर समान रूप से ध्यान नहीं देते हैं। भारतीय महिलाएं अपने परिवार के सदस्यों की देखभाल करने के लिए उनके जीवन को समर्पित करें लेकिन वे अपने स्वयं के विकास से चिंतित नहीं हैं। कई महिलाओं में उत्कृष्ट उद्यमी योग्यताएं हैं, लेकिन वे अपने परिवारों के लिए अतिरिक्त आय स्रोतों को बनाने के लिए अपनी क्षमताओं का उपयोग नहीं कर रहे हैं जो अपने स्वयं के प्रति-अवता को बढ़ाने के साथ हाथ में हाथ लगेंगे। कभी-कभी वे आत्मनिर्भरता की अवधारणा के बारे में भी नहीं जानते हैं, इसके अलावा व्यापार की सफलता व्यापार के लिए और परिवार प्रबंधन के लिए महिलाओं के लिए विस्तारित व्यापार प्रक्रिया और प्रबंधन में निर्भर करती है। (श्रुति लथवाल, 2011),

3. वित्तीय स्वतंत्रता की खराब डिग्री: भारतीय परिवारों में महिलाओं के लिए वित्तीय आजादी की डिग्री बहुत खराब है, खासकर कम शिक्षित परिवारों और ग्रामीण परिवारों में। इन परिवारों में महिलाओं को परिवार के सदस्यों के विचार के साथ-साथ सामाजिक नैतिकता और परंपराओं पर विचार करने के बिना कोई भी उद्यमशील निर्णय नहीं ले सकता है। वित्तीय निर्भरता के कारण, एक महिला किसी भी व्यवसाय या स्वतंत्र आत्मिक गतिविधि को शुरू नहीं कर सकती। इसलिए यह भारत में महिलाओं के लिए निर्भरता का एक शातिर व्युत्क्रम बन गया है।

4. संपत्ति का कोई प्रत्यक्ष स्वामित्व नहीं है इसमें कोई संदेह नहीं है कि संपत्ति का अधिकार भारत में एक कानूनी प्रावधान के रूप में दिया गया है, लेकिन यह महिलाओं के लिए संपत्ति के अधिकार के संबंध में सबसे महत्वपूर्ण प्रश्नों में से एक को बढ़ाता है। संपत्ति के अधिकार के पेपर पर बहुत कम महिलाएं हैं, सबसे पहले, वे इस दाहिनी के बारे में नहीं जानते हैं। वे केवल अवगत हो जाते हैं जब परिवारों के विवादों के कारण समस्याओं को उनके परिवारों में बनाया जाता है। अन्यथा महिलाएं अपने अधिकार के अपने मसाला का आनंद ले रही हैं, जिसे दूसरे वर्ग के नागरिकों के रूप में माना जाता है, जो उन्हें गरीबी के "विशाल चक्र" (मेहता अनीता और मेहता 2011 में रखता है).

5. उद्यमी कौशल और वित्त के विरोधाभास यहां पर आर्थिक रूप से गरीबों और समृद्ध परिवारों की भारतीय महिलाओं में उद्यमिता की कौशल नहीं है, जो आर्थिक रूप से समृद्ध परिवारों से संबंधित है, पूंजीगत समर्थन है, लेकिन उनके पास अच्छा उद्यमशीलता कौशल नहीं है, इसलिए गतिविधियों को आउटसोर्सिंग हो रही है। समाज के विपरीत पक्ष में आर्थिक रूप से गरीब परिवारों की कई महिलाएं लगातार उद्यमी कौशल हैं, लेकिन उनके परिवारों से कोई वित्तीय सहायता नहीं है। हम इसलिए मानते हैं कि महिलाओं के उद्यमिता की समस्या इस विरोधाभास के जाल में लटका रही है।

6. क्षमता के बारे में कोई जागरूकता नहीं है: शिक्षा का एक बढ़ती स्तर जागरूकता पैदा करना चाहिए। एक व्यक्ति की क्षमताओं के बारे में लेकिन, दुर्भाग्य से हमारी शैक्षिक प्रणाली आर्थिक गतिविधियों को संभालने के लिए महिला की क्षमताओं और उनकी छिपी शक्तियों के बारे में जागरूकता पैदा करने में सफल नहीं हुई है। श्रुति लथवाल (2011) के अनुसार, भारत महिलाओं के शिक्षा स्तर में वृद्धि का सामना करता है और समाज में महिलाओं की भूमिका निभाने वाली भूमिका के रूप में बढ़ती सामाजिक जागरूकता है, लेकिन यह व्यापक रूप से स्वीकार्य सत्य नहीं है क्योंकि यह केवल शहरी भारत में लागू नहीं है और ग्रामीण भारत में भी नहीं। शहरी

वातावरण महिलाओं की स्व-क्षमताओं के बारे में जागरूकता की पहचान करने और जागरूक करने के लिए अनुकूल है। हालांकि, ग्रामीण क्षेत्र में इस प्रकार के रवैये अभी तक विकसित नहीं हुए हैं।

7. जोखिम उठाने की कम क्षमता मेहत और मेहत के अनुसार, 2011, भारत में महिलाएं सुरक्षित जीवन जीती हैं एक महिला को जन्म से अपने परिवार के पुरुष सदस्यों पर निर्भर नहीं किया जाता है। उसे किसी भी प्रकार के जोखिम लेने की अनुमति नहीं है भले ही वह इसे ले जाने के लिए तैयार हो और इसके बारे में भी सुनवाई की क्षमता भी हो। हालांकि, यह पूरी तरह से सच नहीं है क्योंकि कई महान महिलाएं साबित हुई कि उनके पास उद्यमशीलता गतिविधियों में जोखिम लेने के लिए जोखिम असर क्षमता और रवैया है। वे अपने अधिकारों और संभावित स्थितियों के बारे में जानते हैं और इसलिए व्यवसाय के विभिन्न क्षेत्रों (सिंह और रघुवंशी (2012) में शामिल हैं। हालांकि, अधिकांश महिलाएं उद्यमी गतिविधियों का प्रदर्शन नहीं कर रही हैं क्योंकि वे उचित क्षमता नहीं रखते हैं। इसलिए, हमें उन्हें अपने जोखिम असर क्षमता के बारे में पता करने की कोशिश करनी चाहिए।

8. पुरुष श्रमिकों के साथ काम की समस्याएं कई महिलाओं के अच्छे व्यवसाय कौशल हैं, लेकिन वे पुरुष श्रमिकों के साथ काम नहीं करना चाहते हैं और कभी-कभी पुरुष श्रमिक महिलाओं के उद्यमियों के साथ काम करने के लिए तैयार नहीं हैं। श्रुति लथवाल के अनुसार, (2011) अधिकांश उद्यमियों ने तर्क दिया कि कर्मचारियों के अर्द्ध-शिक्षित या अशुभ वर्ग को अपने काम के क्षेत्र में "महिला बॉस' की कल्पना नहीं कर सकते।

9. वित्तीय संस्थानों द्वारा लापरवाही बैंक और वित्तीय संस्थान विकासशील देशों में उद्यमियों के महत्वपूर्ण वित्त हैं, क्योंकि छोटे और मध्यम आकार के फर्म ऑपरेटरों को पूंजी बाजार से उधार नहीं ले रहे हैं। लेकिन इन बैंकों और वित्तीय संस्थानों को महिला उद्यमियों को क्रेडिट प्रदान करने के लिए तैयार नहीं हैं क्योंकि पारंपरिक मन सेट है। उन्हें लगता है कि, यह भविष्य में असंतर्थित संपत्ति का कारण बन सकता है। हालांकि, संयुक्त राष्ट्र औद्योगिक विकास संगठन (यूएनआईडीओ) द्वारा एक रिपोर्ट के अनुसार, "सबूत के बावजूद कि महिला के ऋण चुकौती दरों में से ज्यादा पुरुषों की तुलना में अधिक हैं, महिलाएं क्रेडिट प्राप्त करने में अधिक कठिनाइयों का सामना करते हैं" ।

10. आत्मविश्वास का अभाव एक मजबूत मानसिक दृष्टिकोण और महिलाओं के बीच एक आशावादी रवैया, काम करने के दौरान गलतियों को पूरा करने का डर पैदा करता है (मीना गोयल और जय प्रकाश, 2011)। परिवार के सदस्यों और समाज उद्यमी विकास क्षमता के साथ महिलाओं द्वारा खड़े होने के लिए तैयार नहीं हैं। ऐसी स्थिति में महिलाओं को इस प्रकार के बाधाओं को संभालने के लिए अपने आत्मविश्वास को विकसित करना चाहिए। इस तथ्य के बावजूद कि भारतीय महिलाएं अपने आत्मविश्वास के विकास के लिए एक सुरक्षित जीवन पसंद करती हैं। वे न मानसिक और न ही आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हैं। इसलिए हमें समाज और परिवार के सदस्यों से नैतिक समर्थन के माध्यम से अपना विश्वास विकसित करने की कोशिश करनी चाहिए।

11. पेशेवर शिक्षा का अभाव राव (2007) ने अपने अध्ययन में देखा कि गरीबी और निरक्षरता हमारे देश में महिलाओं की उद्यमशीलता की कम दर के मूल कारण हैं। शैक्षिक स्तर और पेशेवर कौशल भी उद्यम के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी को प्रभावित करते हैं। हम महिलाओं को शिक्षा प्रदान कर रहे हैं लेकिन पेशेवर शिक्षा

प्रदान नहीं कर रहे हैं। अगर हम पेशेवर विद्यालयों में देखते हैं तो हम पाते हैं कि बहुत कम महिलाएं छात्र हैं यदि हम पेशेवर शिक्षा में नामांकित महिलाओं के ग्रामीण शहरी अनुपात का विश्लेषण करते हैं तो हम यह महसूस करते हैं कि बहुत कम ग्रामीण महिला छात्रों ने इस प्रकार की शिक्षा को नामांकित किया है। यहां तक कि माता-पिता पेशेवर शिक्षा से गुजरने के लिए अपनी बेटियों को भेजने के लिए तैयार नहीं हैं। कभी-कभी ऐसा होता है, हालांकि उद्यमी विकास कार्यक्रम में भाग लेने से कई महिलाएं मन की एक उद्यमी झुका नहीं होती हैं।

12. गतिशीलता की कमी गनी एट अल (2011) गतिशीलता के कारण महिलाओं के उद्यमिता विकास में महत्वपूर्ण समस्याएं हैं। वे व्यावसायिक गतिविधियों के लिए अपनी जगह छोड़ने और अपने आवासीय क्षेत्रों में ही रहने के लिए तैयार नहीं हैं। ये लक्षण उद्यमी के रूप में महत्वपूर्ण हैं अपने मौजूदा स्थानीय क्षेत्र में अपने व्यवसाय शुरू होते हैं और इस प्रकार उनके जन्म के क्षेत्र में (डीहल और सोरेनसन 2007) में अलग-अलग पाया जाता है।

13. उद्यमियों की सफलता के साथ बातचीत करना सिंह (2008) ने उल्लेख किया कि सफल उद्यमी के साथ बातचीत की कमी महिलाओं में भी एक समस्या है। भारत में उद्यमशीलता सफल उद्यमी हमेशा उन सामयती महिलाओं के लिए मॉडल की भूमिका निभाते हैं जिनके लिए उद्यमी गतिविधियों की क्षमता होती है और उनकी क्षमता साबित करने के लिए आर्थिक गतिविधियों का नेतृत्व करने के लिए नेतृत्व करते हैं। लेकिन दुर्भाग्य से ज्ञान को जलाने और सफल महिलाओं के उद्यमियों के अनुभव प्रदान करने के लिए इस तरह के संपकों का कोई भी प्रावधान नहीं है। कई अर्थशास्त्री यह तर्क देते हैं कि यह महिलाओं के उद्यमिता के विकास में मुख्य बाधा है।

प्रमुख नीति अनुशंसाएं :-

काम करने वाले सस्ती बाल देखभाल की उपलब्धता और कार्यस्थल में समान उपचार सुनिश्चित करने से श्रम बल में भाग लेने के लिए महिलाओं की क्षमता में वृद्धि करें। अधिक आम तौर पर समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार और उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए आम तौर पर महिलाओं के उद्यमिता के मामले में लाभ होगा।

महिलाओं के उद्यमियों की आवाज़ सुनें महिलाओं के व्यापार स्वामित्व के सरकारी कार्यालयों का निर्माण इस सुविधा के लिए एक तरीका है। ऐसे कार्यालयों में कार्यक्रम की जिम्मेदारियां शामिल हों जैसे कि महिला व्यवसाय केंद्र, सूचना सेमिनार और बैठकों का आयोजन और / या वेब-आधारित जानकारी प्रदान करने के लिए उन व्यवसायों को शुरू करना और विकसित करना चाहते हैं।

सभी एसएमई से संबंधित नीतियों के गठन में एक महिला उद्यमशीलता आयाम को शामिल करें। यह सुनिश्चित करके किया जा सकता है कि महिलाओं के उद्यमशीलता पर प्रभाव डिजाइन मंच पर ध्यान में रखा जाता है। महिलाओं के उद्यमी नेटवर्क के विकास को बढ़ावा देना ये विकास और पदोन्नति के लिए महिलाओं के उद्यमशीलता और मूल्यवान उपकरणों के बारे में ज्ञान के प्रमुख स्रोत हैं। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्क के बीच सहयोग और साझेदारी एक वैश्विक अर्थव्यवस्था में महिलाओं द्वारा उद्यमशील प्रयासों की सुविधा दे सकती है।

समय-समय पर महिलाओं के स्वामित्व वाली व्यवसायों की सफलता पर किसी भी एसएमई से संबंधित नीतियों के प्रभाव का मूल्यांकन करें और उस तरह के व्यवसायों का लाभ उठाने के लिए। उद्देश्य उन लोगों की

प्रभावशीलता को बेहतर बनाने के तरीकों की पहचान करना चाहिए जिन्हें बनाए रखा जाना चाहिए। इस तरह से पहचान की जाने वाली अच्छी प्रथाओं को तीव्रता से और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर साझा किया जाना चाहिए।

अर्थव्यवस्था में महिलाओं के उद्यमियों की भूमिका के बारे में हमारी समझ के तथ्यात्मक और विश्लेषणात्मक रूपों को सुधारें। इसके लिए महत्वपूर्ण घटनाओं और नीतियों के प्रभाव के लिंग के संबंधित क्रॉस-देश तुलनात्मक विश्लेषण और अनुदैर्ध्य अध्ययन को पूरा करने के लिए सांख्यिकीय आधार को मजबूत करने की आवश्यकता होती है। "महिलाओं को काम करने और समृद्ध करने की पूरी स्वतंत्रता है। इस समय से वे अपने घरों से बाहर जाते हैं वे मनुष्य हैं: व्यापारिक महिला का व्यवसाय एक ही व्यक्ति के रूप में एक ही वजन है।"

निर्धारण मापिनी :- निर्देशानुसार आंकड़ों (मात्रात्मकता) से मापदंड प्रस्तुत किया गया है । मेरे द्वारा ऑनलाइन तथा ऑफलाइन डाटा एकत्र किया गया है ।

250 नमूना इकाई एकत्र किया गया । चित्र द्वारा स्पष्टीकरण

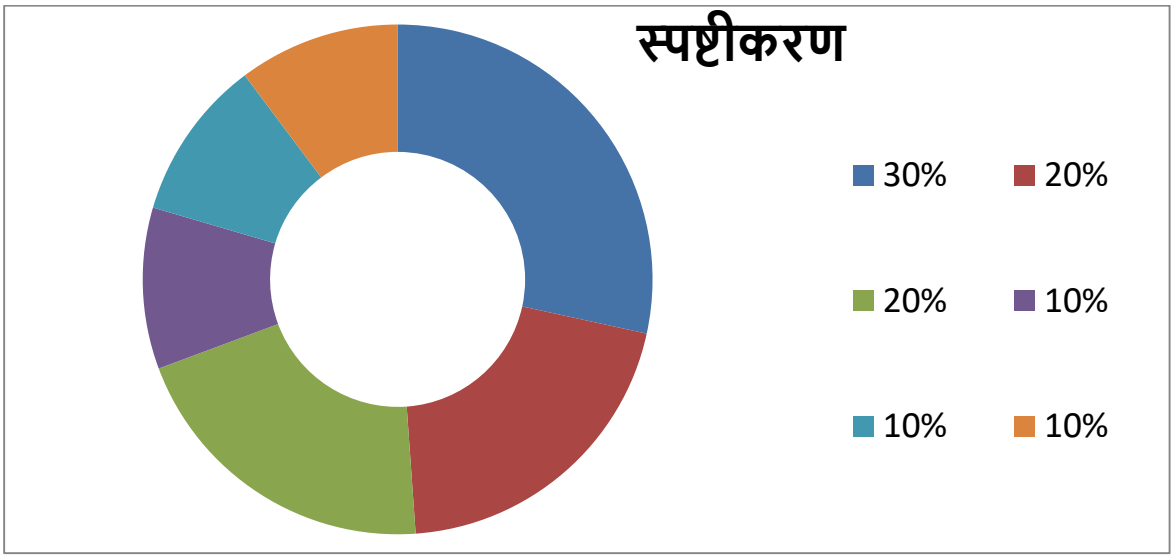

30% - शिक्षा की कमी

20% - आर्थिक तंगी

20% - पारिवारिक बंधन

10% - शोषण

10% - रोकथाम

10% - बाल विवाह

अनुसंधान क्रियाविधि :- मेरे द्वारा वर्णात्मक विधि का प्रयोग कर के टी परीक्षण द्वारा प्रश्नावली तैयार की गई है , तथा सर्वेक्षण किया गया है ।

जिसकी निम्नलिखित प्रशावली है :-

प्रश्न 1) 19 से 25 वर्ष की आयु सीमा वाली उद्यमी महिलाएं किन परिस्थितियों का सामान करती है

उत्तर :- अनुभव की कमी

प्रश्न 2) महिला उद्यमीयों को सबसे ज्यादा होने वाली समस्याएं

उत्तर :- प्रतिस्पर्धा

प्रश्न 3) नई पीढ़ी की उद्यमी महिलाओ को अपना व्यवसाय शुरू करने में होने वाली समस्या क्या है ?

उत्तर :- आर्थिक तंगी

प्रश्न 4) महिलाओं को परिस्थिति अनुरूप कार्य को ना कर पाने से क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर :- आर्थिक स्थिति मजबूत नहीं हो पाना

टिप्पणी निष्कर्ष :- महिला देश के एक महत्वपूर्ण मानव संसाधन हैं। और हर राज्य को उन्हें आर्थिक विकास और विकास के मध्यस्थों के रूप में उपयोग करने की कोशिश करनी चाहिए। महिलाओं के उद्यमिता के लिए प्रोत्साहन उस तरीके से एक है जो इसके लिए एक है। लेकिन दुर्भाग्य से यह देखा जाता है कि समाज के पारंपरिक मन और समूह और संबंधित अधिकारियों की लापरवाही ने इंडेंट में महिलाओं के उद्यमिता विकास में महत्वपूर्ण बाधाओं को महत्वपूर्ण है। राज्य और समाज की जिम्मेदारी के अलावा, जीवन के एक निश्चित एजेंडे की अनुपस्थिति, महिलाओं के परिवार और कैरियर के दायित्वों के बीच संतुलन की अनुपस्थिति, महिलाओं के लिए वित्तीय स्वतंत्रता की खराब डिग्री, महिलाओं को संपत्ति के प्रत्यक्ष स्वामित्व की अनुपस्थिति, आर्थिक रूप से समृद्ध और गरीब महिलाओं में उद्यमशीलता कौशल और वित्त के विरोधाभास, क्षमता के बारे में कोई जागरूकता नहीं, जोखिमों को सहन करने, कम करने की क्षमता के लिए काम करने की क्षमता, वित्तीय संस्थानों द्वारा लापरवाही, आत्मविश्वास की कमी, पेशेवर शिक्षा की कमी, सफल उद्यमियों के साथ बातचीत की कमी और भारत में महिलाओं के उद्यमिता विकास की प्रमुख समस्याएं हैं। इसलिए, महिलाओं के उद्यमियों के साथ प्रेरित, प्रोत्साहित करने, प्रेरित और सह-संचालित करने की सतत प्रयास की आवश्यकता है, व्यापार के संचालन के लिए विभिन्न क्षेत्रों के बारे में महिलाओं के बीच जागरूकता पैदा करने के इरादे के साथ बड़े पैमाने पर जागरूकता कार्यक्रमों पर जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए।

ग्रंथसूची :- 1) कोराकोड टा, अलहसन ए. बी. बावा एम.सी. अब्दुल-ए एम. डी., हैरिसन एसकेडीई। गायक, विलास एफ (2021), "आज आईओटी सामग्रियों का उपयोग करके उद्यम मानव संसाधन प्रबंधन का अनुकूलनः कार्यवाही, जुलाई 2021 2021

एलोविर लिमिटेड

http://www.scwricedirect.com/science/article/p/S2214785321051270

2) 5. जैकब चेरियन और एट अल. (2020), 'क्या नेतृत्व शैली संयुक्त अरब अमीरात के संदर्भ में संगठनात्मक प्रदर्शन को प्रभावित करती है। एक अध्ययन इंटरनेशनलजर्नल ऑफ मैकेनिकल इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (आईजेएमईटी), खंड 11, अंक 9.2020 पीपी, 23-32 http://www.igeme.com/ijmet/issues.asp?JType=IJMET&VType=11&I Type9

3) दीक्षा रानी पाढ़ी वी (2019) महिला उद्यमिता की स्थिति, समस्याएँ एवं सभावनाएँ । अमर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक अनुसंधान और प्रबंधन अध्ययन खंड 1 एम हिमुशी सी (2019) माइक्रोफाइनेंस और महिला सशक्तिकरण भारत के साक्ष्य साहित्य की समीक्षा । जर्नल ऑफ द गुजरात रिसर्च

4) बी. रमेश (2018) भारत में महिला उयमिता की समस्याएँ और संभावनाएं 2018 /JRAR जनवरी 2018 खंड 5, अंक 1 www.ijaar.org(E-ISNS)2348-1269,P- ISSN 2349-5138

5) रघुवंशी जे. अग्रवाल, आर और घोष, पी. के (2017) महिला उधमिता में बाधाओ का विश्लेषण, मै दृष्टिकोण उद्यमिता जर्नल 26 (2) 220238 नुकपोजा जे. ए और ब्लैकसन सी. (2017) गरीबी कम करने में माइक्रोफाइनेंस हस्तक्षेप ग्रामीण घाना में महिला किसान-उधामियो का एक अध्ययन अफ्रीकी का जर्नल व्यवार डी ओ आई 10.1080/152 28916.2017.1336915

6) कुमार रवि (2016) गुलबर्गा शहर में महिला उद्यमियों से सक्षम बनाने में माइक्रोफाइनेंस का योगदान इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ बिजनेस क्वांटिटेटिव एंड इकॉनमिस एंड अटलाइड मैनेजमेंट रिसर्च खंड 2 अंक 8 http.jjbemr.com wpcontent/uploads/2016/02 contribution of microfinance in empowering से लिया गया है महिला उद्यमि इन गुलमर्ग सिटी

7) जाना एम एम (2015) भारत में माइकोफाइनेंस और महिला सशक्तिकरण एक अनुभवजन्य विष्लेषण प्रबंधन लेखाकार 50 (7) 42-47

8) चिप्पा, एम एल शर्मा, एस. और दुबे आर. के (2004) ग्र राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रो में महिला सशक्तिकरण, गरीबी उन्मूलन और रोजगार सुरक्षा पर माइक्रोफाइनेंस का प्रभाव। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इनोवेटिव रिसर्थ इन साइंस, 3 (2) 9073-9080

यास्मीन, वी. एस, और गंगैया, बी. (2014) सूक्ष्म उद्यमो के माधाम महिला सशक्तिकरण - वाई एस आर का एक अध्ययन जिला ए. पी. आई ओ एस आर जर्नल ऑफ ह्यूमेनिटीज एंड सोशल साइंसेज (आइओएस आर जेएचएसएस) 19 (2), 39-48

गुप्ता ए दास. पी. और चटर्जी, एस (2014) पश्चिम बंगाल के पिछड़े क्षेत्र मे जीवन की गुणवत्ता पर बैंक ऋण का प्रभावः एक केस स्टडी बिजनेस इनसाइट, 1, 1-21.

9). जी सईद और पी. त्रिवेदी मुंबई मे सुक्ष्म उद्योगो के विकास में सुक्ष्म वित्त संस्थानों की भूमिका एक अनुभवजन्य अध्ययन आई ओ एस आर जर्नल ऑफ एकोनॉमिक्स एंड फाइनेंस http://www iosrjournals.org/iosr-Jef/papers/SIFICO/Vension - 2/6.51-61.pdf से लिया गया।